मोरंगे

जनवरी–फरवरी, 2026

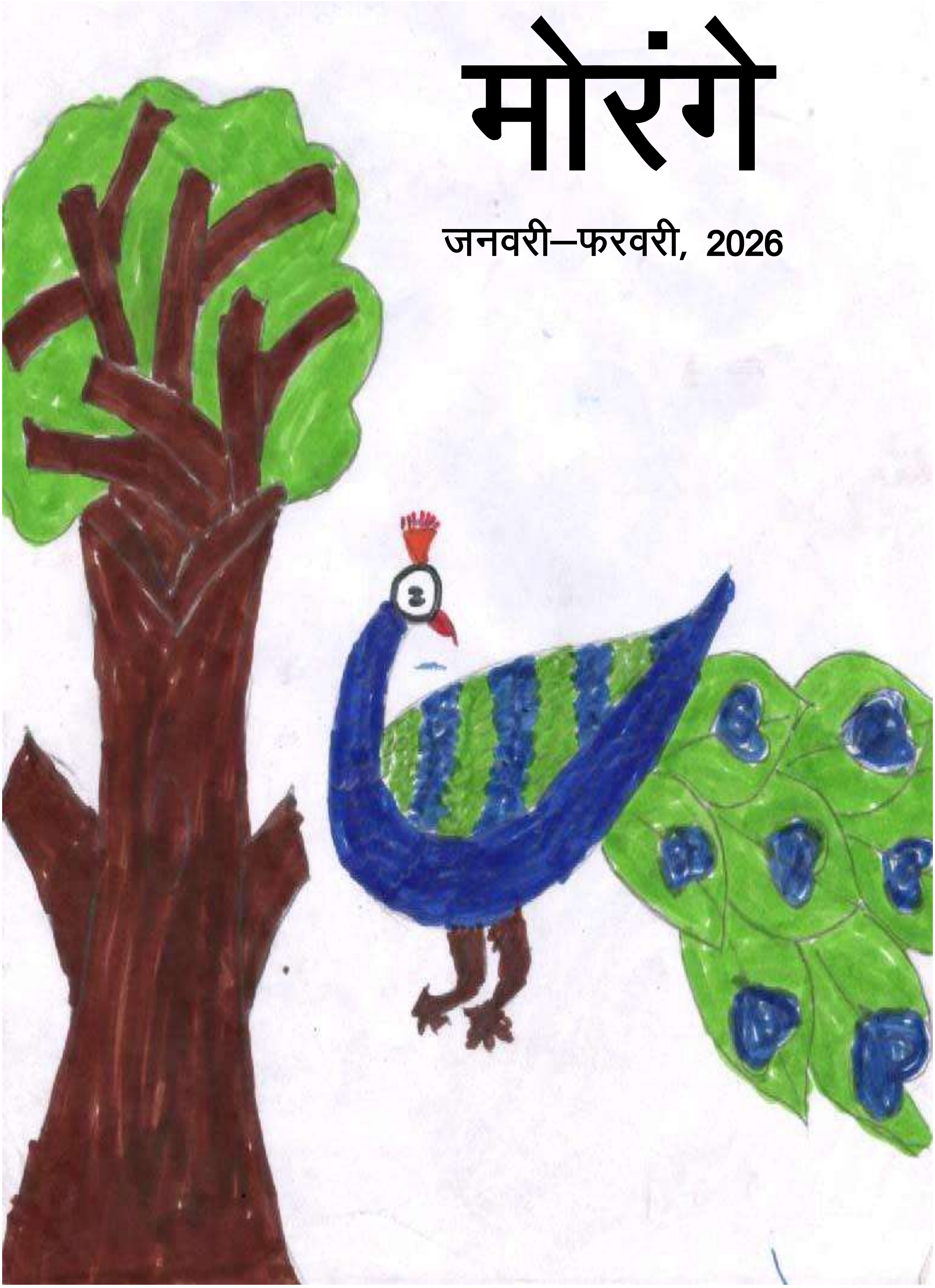

अनुक्रम

गीत कविताएँ

सर्दी की चाय

चिड़िया कहाँ रहेगी

कद्दू

पतंग

आपणी गाय

गर्मी

खीर

कहानियाँ

धन्यवाद डॉक्टर

सूरजमुखी का फूल

लालची औरत

याद की धूप छाँव में

कबूतर से दोस्ती

चक्कर डेटा केबल का

बात लै चीत लै

समय की कीमत

शकरकंदी

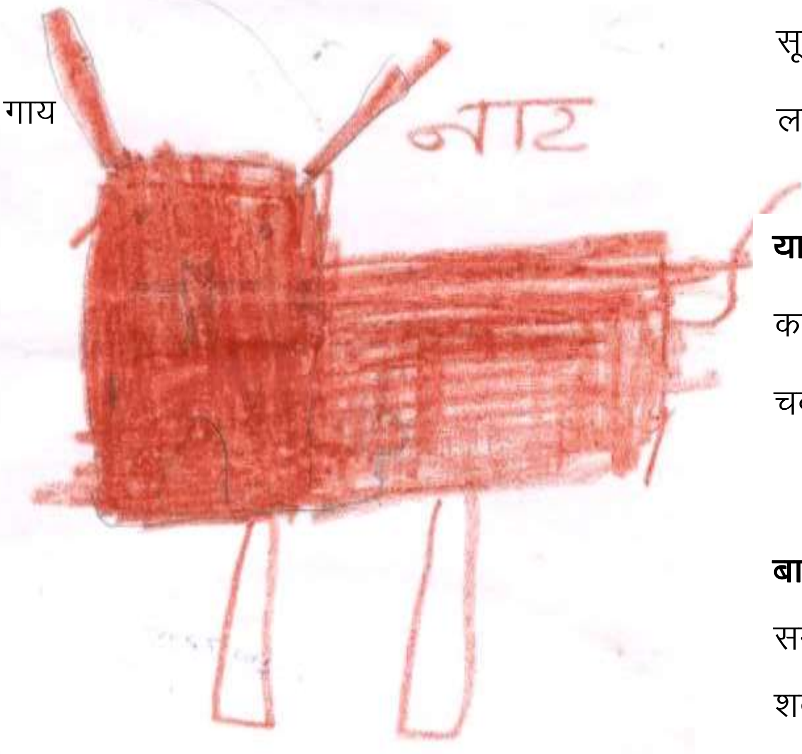

राहुल गुर्जर, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बोदल

सम्पादन : राजेश कुमावत
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : विष्णु नायक, फैलो, फोरम थियेटर टीम
वर्ष 16 अंक 187–188

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

yatra foundation AUSTRALIA
'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

गीत कविताएँ

सर्दी की चाय

देखो देखो आ गई सर्दी
ठण्ड की पहने ये तो वर्दी
मन को भाती देखो चाय
रामू लालया गर्म चाय
ठण्ड गई छुप,
हम भी हो गये चुप।

ईशीता प्रजापत, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिम्मतपुरा।

चिड़िया कहाँ रहेगी

आँधी आई जोर–शोर से
डालें टूटी झकोर से
उड़ा घौंसला, अंडे फूटे
कैसे दुःख की बात करेगी
अब ये चिड़िया कहाँ रहेगी
हमने खोला अलमारी को
बुला रहे हैं बेचारी को
पर वो ची–ची करती
घर में तो वो नहीं रहेगी
अब ये चिड़िया कहाँ रहेगी
घर में पेड़ कहाँ से लायें
कैसे ये घौंसला बनाये
कैसे फूटे अंडे जोड़े
किससे ये सब बात कहेगी
अब ये चिड़िया कहाँ रहेगी।

किस्मत बैरवा, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर सांवलपुर।

मिस्ती जैन, कक्षा–9, उमंग सेंटर कुण्डेरा

कद्दू

झौपड़ी के ऊपर कद्दू था
कद्दू को देखकर मन ललचा
मन को समझाने पर
मन ने कहा
बना हलवा और सबको खिला
सबको खिलाकर तूंद फूला
तूंद फूलाकर नाच दिखा
नाच दिखाकर मन बहला।

रीना सैनी, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर ढाणी खवा।

पतंग

पतंग उड़ी
फिर कटी
कटते ही नीचे गिरी
मेरे बाड़े में
दो बच्चों को जा मिली
फिर बंधी डोर से
फिर उड़ी जोर से

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

पूजा मीना, कक्षा–9, उमंग सेंटर रांवल

आपणी गाय

अरी म्हारी माई,

देख आपणी आय

रात में बियां आई

गाई के हुयो पाडो

पाडो है लाल लाल

जैसे लगाई हो गुलाल

कान है लम्बे

नुकीली है नाक

गोल मटोल मुंडो

अंटी सी आँख

छोटी सी पूंछड़ी

मन को भाई

अरी म्हारी माई,

देख आपणी गाय।

नरेश बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

मुस्कान गुर्जर, कक्षा–2, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर

गर्मी

गर्मी है भई गर्मी है
पसीने की गर्मी है
धूप तेज और गर्मी भारी
हवा तेज और कूलर भारी
कितनी तेज ये गर्मी है
सही नहीं है ये गर्मी
गर्म लू जला रही है
पसीना खूब बहा रही है
थोड़ी सर्दी को आने दो
कूलर जरा चलाने दो
राहत थोड़ी पाने दो
गर्मी है भई गर्मी है।

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

खीर

मैंने बनाई खीर
थोड़ा चावल, ज्यादा दूध
चूल्हे पर उबाला
काजू और किसमिस भी डाला
और खोपरे का बुरादा
चीनी जब मिलाई
इलाइची की खुशबू आई
गरम गरम सबको भाई।

सोना बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

कहानियाँ

धन्यवाद डॉक्टर

एक घने जंगल के किनारे एक छोटी सी चिड़िया रहती थी। वह हर सुबह चहचहाते हुए दाने ढूंढने निकलती और अपने बच्चों के लिए खाना लाती। रोजाना बच्चे बेसब्री से उसका इंतजार करते थे।

एक दिन बहुत देर घूमने के बाद उसे एक खेत में थोड़े से दाने मिले। वह सोच रही थी आज बहुत देर हो गई है। बच्चे भूख से तड़प रहे होंगे। इसलिए वह जल्दी–जल्दी दाना चुग रही थी। जल्दी–जल्दी खाते हुए अचानक उसके मुँह में एक नुकीला कांटा फंस गया। चिड़िया जोर–जोर से चहचहाने लगी, लेकिन कांटा ज्यादा अंदर घुस गया और चुभने लगा। उसे बोलने में भी परेशानी होने लगी। वह दर्द से तड़पने लगी और सहायता के लिए चिल्ला भी नहीं पा रही थी। वह बहुत परेशान हो गई। उसने उड़कर पास के पेड़ पर बैठे बंदर से मदद मांगी। बंदर बोला, ''मैं तो खेल रहा हूँ, तुम किसी ओर से मदद मांगो।'' फिर वह कौवे के पास गई। कौवे ने कहा, ''मैं तो खाना बना रहा हूँ, अभी समय नहीं है।'' बेचारी चिड़िया दर्द से तड़ती रही। तभी एक छोटी सी गिलहरी वहाँ आई। उसने चिड़िया की हालत देखी और तुरंत बोली, ''डरो मत, मैं मदद करती हूँ।'' गिलहरी ने काटा निकालने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं निकाल पाई। फिर उसने कहा, ''ऐसा करो पास में ही एक अस्पताल है। तुम वहाँ चली जाओ। कोई भी तुम्हारी मदद कर देगा, नहीं तो तुम मर जाओगी।'' लेकिन चिड़िया लड़खड़ाती आवाज में बोली, ''बहिन, मुझे वहाँ जाने में डर लग रहा है। मदद करने की बजाय वे मुझे भगा देंगे।'' गिलहरी बोली, ''डरो मत, हर इंसान खराब नहीं होता। तुम जाकर उनके पास बैठ जाना। वे तुम्हारी मदद अवश्य करेंगे।''

चिड़िया डरती हुई उनके पास गई। वहाँ जाकर डॉक्टर के सामने टेबल पर बैठ गई। डॉक्टर ने उसे भगाने की कोशिश की, पर चिड़िया नहीं उड़ी। डॉक्टर ने सोचा, कुछ तो गड़बड़ है इस चिड़िया के साथ, ये तो चहचहा भी नहीं रही है। इसने तो मुँह फाड़ रखा है। डॉक्टर ने बड़े प्रेम से चिड़िया को पकड़ा और उसके मुँह के अंदर देखा तो एक बबूल का कांटा मुँह में फसा हुआ था और खून निकल रहा था। उसने बिना कोई देरी किए ऑपरेशन करके कांटा बाहर निकाला। उसका इलाज किया। चिड़िया सही हो गई। उसने

चहचहा कर डॉक्टर को धन्यवाद दिया और उड़कर अपने बच्चों के पास गई। सभी काफी खुश हुए।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

सपना, कक्षा–9, उमंग शिक्षण केन्द्र श्यामपुरा

सूरजमुखी का फूल

एक बार की बात है। एक बगीचे में बहुत सारे फूल थे। उनमेंएक सूरजमुखी का भी फूल था। सूरजमुखी के फूल से कोई भी दोस्ती नहीं करता था क्योंकि सूरजमुखी का फूल बदसूरत था किन्तु सूरजमुखी के फूल में एक खासीयत भी थी कि उसकी आवाज बहुत सुंदर थी। एक दिन वहाँ पर गुलाब का फूल उगा। वह फूल बहुत सुंदर था सब उसके पास आये और गुलाब के फूल की बढ़ाई करने लगे तो उसने कहा कि मुझे मीठी आवाज वाले पसंद हैं | तभी, बगीचे के एक कोने में बहुत ही मुधुर आवाज में गीत सुनाई दिया। वह आवाज सूरजमुखी के फूल की थी। गुलाब चकित रह गया कि जिसे सभी बदसूरत समझकर नजरअंदार कर रहे थे। गुलाब ने तुरंत ही सूरजमुखी के पास जाकर कहा, तुम्हारी आवाज अद्‌भुत और बहुत ही सुरीली है। मैंने आज तक इतनी मीठी आवाज नहीं सुनी। क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे? सूरजमुखी की आँखों में आंसू आ गए, क्योंकि पहली बार किसी ने इतने सम्मान के साथ देखा था। उसने मुस्कुराकर हाँ में जवाब दिया और कहा, मुझे तुम्हारे साथ दोस्ती करके बहुत खुशी होगी। यह देखकर बगीचे के सभी फूल सूरजमुखी को पसंद करने लगे और हँसते खिलते रहे।

प्रिया गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

विजय बंजारा, उम्र–10 वर्ष, नवरंग शिक्षण केन्द्र बहरावंडाकलां

लालची औरत

एक छोटा सा श्यामपुर नाम का गाँव था। उस गाँव में श्यामू चाचा रहा करते थे। वो खेती का काम ही करते थे। उसके पास दो भैंस थे। उनका दूध बेचकर अपना गुजारा करते थे। सुबह–सुबह जब श्यामू चाचा दूध बेचने जाते तो सभी गाँव वालों से मुलाकात हो जाया करती और उनसे सभी गाँव के लोग खुश थे। यह कार्य निरंतर चल रहा था। समय के साथ श्यामू अब बीमार रहने लगा और दूध बेचने का काम उसकी पत्नी करने लगी थी। श्यामू पूरे गाँव में शुद्ध दूध बेचता था किन्तु उसकी पत्नी को यह बात हजम नहीं हो रही थी। धीरे–धीरे उसने दूध में मिलावट शुरू कर दी थी और लालच बढ़ता ही जा रहा था। एक दो साल में ही गाँव वालों ने दूध के बारे में उससे बार–बार शिकायतें की किन्तु उसका कोई असर नहीं हुआ। बच्चों को सही पोषण युक्त दूध नहीं मिलने से अधितर बच्चे कमजोर हो गए और उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा था। लालची औरत सीधे मुँह बात ही नहीं करती थी। कुछ लोगों ने तो खुद की बकरियाँ भी खरीद ली थी। तीन–चार साल में सभी परिवारों ने बकरियाँ खरीद ली। अब सभी के घरों में बच्चों को बकरी का दूध मिलने लगा था। इस वजह से गाँव का कोई भी परिवार लालची औरत से दूध नहीं खरीदता था। जब यह बात श्यामू को पता चली तो उसने अपनी पत्नी को खूब खरी–खोटी सुनाई और पूरे गाँव से दोनों ने माफी मांगी। अब श्यामू के घर से कोई भी दूध बेचने नहीं जाता और न ही गाँव में कोई दूध खरीदता था। हाँ पर अब गलती से भी कोई व्यक्ति श्यामू के घर दूध लेने जाता तो खुशी–खुशी उसे श्यामू की पत्नी द्वारा पीवर दूध ही दिया जाता था।

करिना बैरवा, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

याद की धूप छाँव में

कबूतर से दोस्ती

एक दिन की बात है। हम सब घर वाले बैठे हुए थे। तभी मेरा भाई बाजार से दौड़ते हुए आया और मम्मी से बोला कि मम्मी अभी अपने घर के बाहर नाली के अंदर एक कबूतर पड़ा हुआ है और वह जिंदा है। मम्मी ने बोला कि गिर गया होगा बेचारा। तब छोटा भाई बोला नहीं मम्मी उसके करंट लग गया और वह रोड़ पर गिर गया था और अब वह नाली में छिप गया है। भाई ने बड़े ही प्यार से पूछा कि उसको अपने घर ले आऊँ क्या? मम्मी के हाँ कहने पर वह तुरंत दौड़कर गया और उस कबूतर को घर ले आया। मैंने उसे हथेली में रखकर देखा। वह बहुत डरा हुआ था। मैंने उसे दूध पिलाने के लिए दूध से भरा कप उसके आगे रखा किन्तु वह पी नहीं पाया। मैंने एक खाली इंजेक्शन की आवश्यकता महसूस की। मुझे याद आया कि एक खाली इंजेक्शन की सीरिंज देखी थी। मैंने उसे काफी देर तक खोजा अंततः वह मुझे बाड़ में मिल ही गया। मैंने इंजेक्शन की निडिल (सुंई) को हटाकर दूध भर दिया और उसे कबूतर की चोंच में डालकर थोड़ा–थोड़ा दूध पिलाया। उसे कूलर की हवा में रखा और रोटी के छोटे–छोटे टुकड़े खिलाए गए। उसी दिन उसका नया घर दीवार के आड़े में बनाया गया। जिसमें उसको सोना था। उसे रात को सुला दिया गया। दूसरे दिन जब हमने चाय पी तो उसे भी चाय पिलाई गई। दो दिन में वह पूरी तरह ठीक हो गया और हमारे घर का सबसे छोटा सदस्य बन चुका था। अब उसको डर भी नहीं लगता था। वह भी बहुत मस्ती करने लग गया था। वह इधर–उधर फुदकता और कई बार उड़कर कंधे पर बैठ जाता था। जब भी मैं काम से घर लौटती तो मैं सबसे पहले उसे ही खोलती हूँ और उससे बहुत सारी प्यारी–प्यारी बातें करती और उसको सहलाती। उसके साथ थोड़ी मस्ती भी करती। उसे रोज नहलाया जाता था। अब वह धीरे–धीरे बड़ा भी हो रहा था। हम सबने सोचा लिया था कि वह अब हमारे साथ हमारे घर ही रहेगा। लेकिन पापा बोलते थे उसे उड़ा दो, उसे स्वतंत्र रहने दो। लेकिन हमने उसे कहीं नहीं जाने दिया। एक सुबह जब हम चाय पी रहे थे तब वह अचानक उड़ गया। हमें पता नहीं था कि वह कहाँ गया है। हमने काफी देर तक इंतजार किया किन्तु वह नहीं आया। हम बहुत दुखी हुए कि वह अब कभी भी नहीं आएगा और हमसे भी नहीं मिलेगा। दो–तीन दिन बाद अचानक हमारे घर की दीवार पर मैंने उसे बैठे हए देखा तो

मेरा खुशी का ठिकाना नहीं रहा। और सभी घरवालों को मैंने दिखाया। उसे देखकर सभी खुश हुए। अब वह रोजाना थोड़ी देर के लिए हमारे घर आकर जरूर बैठता था। शायद वह भी हमें नहीं भूला।

ज्योति सैन, शिक्षिका, उमंग सेंटर शेरपुर।

विक्रम नायक, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

चक्कर डेटा केबल का

उस समय की बात है जब मैं पढ़ती थी। मुझे कक्षा का तो पता नहीं पर मैंने एक कहानी पढ़ी थी ''चक्कर चप्पलों का'' उसमें एक आदमी की चप्पलें जो कि उसका पीछा नहीं छोड़ती। उसी से मिलता जुलता मेरा एक अनुभव रहा। मैं आपके साथ शेयर कर रही हूँ। पिछले महिने मेरे मोबाइल की डेटा केबल मेरे बच्चे ने खींचकर खराब कर दी। मैंने बहुत कोशिश की कि यह ठीक हो जाये और मेरे मोबाइल में लग जाये लेकिन वह नहीं चली। मैंने उसको समूह में आलमारी में रख दिया। गिरिराजपुरा में मोबाइल की दुकान नहीं है। मैंने मेरे शिक्षक साथियों से कहा कि आप सवाई माधोपुर जाओ तब मेरे लिए एक डेटा केबल ले आना। मेरी खराब हो चुकी है। तब उन्होंने कहा हम जायेंगे तब ले आयेंगे। तब तक मोबाइल हमारे चार्जर से चार्ज कर लेना। अब मैं मोबाइल उनके चार्जर से चार्ज करती रही। अब जिस समूह में मैने वो डेटा केबल रखी उसका समूह का एक बच्चा मेरी डेटा केबल लाया और कहा दीदी ये आपका चार्जर मैंने कहा यह खराब है इसको फेंक दो। बच्चे ने वो डस्टबीन में डाल दी और मैं मेरे काम में व्यवस्त हो गई। दूसरे दिन 2 बच्चे आये और उन्होंने वह डेटा केबल दिखाते हुए कहा दीदी यह आपका चार्जर वहां किसी ने डस्टबीन में डाल दिया, मैंने उनसे कहा यह खराब हो गया। इसको फेंक दो। बच्चों ने उसको फेंक दिया। उसके बाद किसी ने उसको उठाकर समूह में रख दिया फिर उस समूह के बच्चे मेरे पास आये कहा, दीदी–दीदी आपका चार्जर मैंने बच्चों भी नहीं कहा और लेकर उसको डस्टबिन में डाल दिया और दिवाली की छुट्टियों में घर चली गई। जब मैं वापस आई तो मैंने देखा कि ऑफिस में मेरी डेटा केबल चार्जर में लगा रखी थी। मैंने पृथ्वीराज जी से पूछा कि यह चार्जर किसका है तो वे बोले मेडम यह आपका ही तो है मैंने कहा यह आपको कहाँ से मिला तो उन्होंने कहा कि बच्चे लाये हैं। उन्होंने कहा यह दीदी का है। मैंने पृथ्वीराज जी से कहा कि यह डेटा केबल 15 दिन से ही मेरे पास फेंकने के बाद भी वापस आ जाती है इसका क्या करूं? फिर मैंने ही उसको जहाँ कचरा जलाते हैं उसको डाल दिया और ऑफिस में आकर अपना काम करने लगी तो एक बच्चा आया और बोला दीदी आपका चार्जर हेप्पी ने पेड़ पर लटका दिया। मैंने सोचा कि हेप्पी ने मेरा नया चार्जर ले गया और मैं भागकर गई तो वही खराब डेटा केबल पेड़ पर लटक रही थी और 2–3 बच्चे उसको उतारने की कोशिश कर रहे थे और मुझसे हेप्पी की शिकायत

करने लगे। मैंने उनसे पूछा कि यह तुम्हें कहाँ से मिला तो वे बोले कि किसी ने आग में डाल दिया था तो हमने इसको निकाल लिया फिर हेप्पी को दे दिया कि तेरी मम्मी को दे देना। लेकिन इसने घुमाते हुए इसको पेड़ पर लटका दिया फिर मैंने उसको पेड़ से उतारा और अपने पास रख लिया। फिर दूसरे दिन सभा हुई तो मैंने सारे बच्चों से सभा में कहा कि यह मेरा चार्जर खराब हो गया है। फिर मैंने चार्जर को इधर–उधर फेंकने की बजाय अपने बेग में रखकर घर ही ले गई।

ममता जागा, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

किस्मत बैरवा, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1. काका मैंने कौओ देखियो, कह भतीजा केसो देखियो, चोंच नहीं पर चुग्तो देखियो, पंख नहीं पर उड़तो देखियो।
2. तीन पैर की चंपा रानी, शाम–सवेरे नहाती है, दाल चावल छोड़कर कच्ची रोटी खाती है।
3. पंख नहीं पर उड़ती हूँ, हाथ नहीं पर लड़ती हूँ, बिना पैर के चलती हूँ बताओ मैं कौन हूँ।

पवन गुर्जर, लखपत गुर्जर, कक्षा–5, उदय किरण फैलोशिप सेंटर गोपालपुरा।

1. खूब चमकीले रात–रात भर, दिन भर रहते छुपके छुपके, सुबह हुई सूरज को देखा, भागे चुपके–चुपके।
2. हरा भरा जो इसे रखे, जीवन उसमें बहता है, यदि कटे तो सूख जाए, सांसों का रिश्ता टूट जाए।

किस्मत बैरवा, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर सांवलपुर।

प्रवीना गुर्जर, कक्षा–2, उदय किरण फैलोशिप सेंटर भैरूपुरा

चुटकले

संता पेड़ से उल्टा लटका हुआ था।

बंता ने पूछा–क्या हो गया?

संता– कुछ नहीं, सर दर्द की गोली खाई है, कहीं पेट में ना चली जाए।

संता– आज मेरी भैंस ने अंडा दिया है।

बंता – अबे, भैंस कब से अंडा देने लगी।

संता – ये मेरा स्टाइल है। मैंने अपनी मुर्गी का नाम भैंस रख रखा है।

इन्टरनेट से आभार

मुरारी लाल, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

बात लै चीत लै

समय की कीमत

एक बार की बात है। एक गाँव में एक बूढ़ा आदमी था। वह बूढ़ा आदमी अपने बेटे से बहुत परेशान था। क्योंकि उसका बेटा बहुत ही नालायक व कामचोर था। वह कोई काम नहीं करता और बस गाँव में इधर–उधर ही घुमा करता था। एक दिन उस बूढ़े आदमी ने अपने बेटे को सबक सिखाने की सोची। उसने अपने बेटे को अपने पास बुलाया और उससे कहा, कि बेटा घर के अंदर अलमारी में एक घड़ी रखी हुई है। तुम उसे निकाल कर लाओ। लड़का घर के अंदर गया और उस घड़ी को बाहर निकाल कर लाया फिर उसके पिता ने उससे कहा, कि अब तुम एक काम करो इस घड़ी को अपने साथ बाजार में लेकर जाओ और जितेने भी लोग तुम्हें मिले सबसे तुम इस घड़ी की कीमत पूछ कर आना। वह लड़का उस घड़ी को लेकर बाजार चला गया। किसी ने उसकी कीमत 500 रूपये बताई, किसी ने 1000 रूपये बताई किसी ने 800 रूपये बताई। सभी ने उस घड़ी की अलग–अलग कीमत बताई। वह लड़का अपने पिता के पास वापस आया और उसने कहा कि पिताजी सभी ने घड़ी की कीमत अपने–अपने हिसाब से अलग–अलग बताई है। किसी ने 500 तो किसी ने 800 तो किसी ने 1000 रूपये बताई है। लड़के की बात सुनकर बूढ़े आदमी ने कहा कि बेटा ठीक है। अब घड़ी को तुम आलमारी में रख दो और सो जाओ। अगले दिन फिर से उस बूढ़े ने अपने बेटे को अपने पास बुलाया और फिर से आलमारी से घड़ी निकालकर कहा कि बाजार जाओ और घड़ी के अंदर जो समय चल रहा है उसकी कीमत पूछ कर आओ। लड़के को समझ नहीं आया कि उसके पिताजी क्या कहना चाहते हैं। दुःखी मन से फिर से घड़ी लेकर बाजार गया और सभी से घड़ी के अंदर चल रहा समय की कीमत पूछने लगा। सभी को लगा कि यह पागल है। बहुत से लोगों ने उसे भगा दिया। कुछ लोग उस लड़के पर हँसने लगे। अब लड़का परेशान हो गया। उसने सोचा कि यह मेरे साथ क्या हो रहा है। तभी वह एक बूढ़े आदमी की दुकान पर जाता है। वह बूढा आदमी व्यस्त था। तभी लड़के ने सवाल किया कि बाबा इस घड़ी के अंदर जो समय चल रहा है उसकी कीमत क्या है? कृपया मुझे बतायें। बूढ़ा आदमी सवाल सुनते ही समझ गया कि लड़का उससे क्या पूछना चाहता है। बूढ़ा आदमी ने अपना कुछ समय निकालकर कहा, बेटा जो यह समय है ना जिसकी तुम कीमत पूछ रहे हो, इसकी

कोई करोड़ों रूपये देकर भी कीमत नहीं लगा सकता। तुम पैसे देकर भी अपनी जिंदगी का एक सैकंड वापस नहीं ला सकते। इसलिए आज तक जिसने भी समय का सही उपयोग किया है उसका जीवन सुखमय ही हुआ है। लड़के को बूढ़े बाबा की बात समझ आ गई और उसे समय की कीमत का पता चल गया।

पायल साहू, कक्षा–10, उमंग सेंटर शेरपुर।

मधु जागा, कक्षा–9, उमंग सेंटर रांवल

शकरकंदी

शकरकंदी को भूल गई। मेरे दादाजी एक किसान हैं। वो अपने खेतों में सब्जियाँ उगाते और उन्हें गाँव की गली–मौहल्लों में बेचा करते थे। इस बार भी दादा जी ने खेतों में बहुत सारी सब्जियाँ उगाई। मेरे दादाजी हमेशा अच्छी किस्म की सब्जियाँ उगाते हैं और उनमें हमेशा देसी गोबर व खाद का ही उपयोग करते थे। एक दिन दादाजी ने मुझसे कहा कि, छोरी आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है, सभी लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे। आज तू सब्जियाँ बेचने चली जा। मैं तुरंत तैयार हो गई और दादाजी का सब्जियों का टोकरा लेकर बेचने चली गई। मैंने मौहल्ले में जाकर चिल्लाना शुरू किया कि सब्जियाँ ले लो, सब्जियाँ, ताजा–ताजा सब्जियाँ ....। यह सुनकर एक औरत अपने घर से निकलकर आई और बोली, कि क्या–क्या सब्जियाँ हैं तुम्हारे पास? मैंने बताया कि आलू, गोभी, टमाटर, प्याज, पालक, मिर्ची और धनियाँ है। एक और सब्जी थी किन्तु उसका नाम मुझे बोलना नहीं आ रहा था। उसका नाम अरबी था। उस औरत ने मुझसे पूछा कि यह कौनसी सब्जी है? मैंने बिना सोचे–समझे वैसे ही नाम बता दिया कि यह शकरकंदी है। उस औरत ने मुझसे आधा किलो खरीद भी ली, शायद वो भी इसका नाम नहीं जानती थी। अगले दिन उसने मेरे से बोला कि कल तुने मुझे क्या दे दिया था? मैंने भी उसे पलटकर जवाब दे दिया कि जब तुम्हें ही नहीं पता तो तुमने खरीदी ही क्यों?

प्रतिभा गुर्जर, कक्षा–4, उदय किरण फैलोशिप सेंटर बाढ़पुर।

विष्णु नायक, फैलो, फोरम थियेटर टीम